International Journal of Educational Research and Development
www.journalofeducation.in
Online ISSN: 2664-7095, Print ISSN: 2664-7087
Received: 29-11-2022, Accepted: 14-12-2022, Published: 31-12-2022
Volume 4, Issue 4, 2022, Page No. 28-29

जन–संचार माध्यम

कल्याणी
शोधार्थी, नेट, जे.आर.एफ, बाबा मस्तनाथ युनिवर्सिटी, अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा, भारत

सारांश
लोकसंपर्क का अर्थ बड़ा ही व्यापक और प्रभावकारी है। लोकतंत्र के आधार पर स्थापित लोकसत्ता के परिचालन के लिए ही नही बल्कि राजतंत्र और अधिनायकतंत्र के सफल संचालन के लिए भी लोकसंपर्क की आवश्यक माना जाता है। लोकसंपर्क का शब्दिक अर्थ है। जनसाधारण से अधिकाधिक निकट संबंध। प्राचीन काल में लोकमत को जानने अथवा लोकरूचि का संवारनेके लिए जिन सधनोंका प्रयोग किया जाता था वे आधुनिक युग में अधिक उपयोगी नह रह गए है। पुराने काल में राजा लोकरूचि को जानने के लिए गुप्तचर व्यवस्था पर आश्रित रहता था तथा अपने निर्देशों और विचारों को वह शिलाखंड़ों ताम्रपत्रों आदि पर अंकित कराकर प्रसारित किया करता था।

मूल शब्दः जन–संचार, लोकसंपर्क, लोकतंत्र, राजतंत्र और अधिनायकतंत्र

प्रस्तावना
भोजपत्रों पर अंकित आदेश जनसाधारण के मध्य प्रसारित कराए जाते थे धर्मग्रंथों और उपदेशों के द्वारा जनरूचि का परिष्कार किया जाता था। आज के समय में भी विक्रमादित्य, अशोक, हर्षवर्धन इनके शिललेख मिलते है। इन से पता चलता है कि प्राचीन काल में लोकसंपर्क का मार्ग कितना जटिल था। धीरे–2 आधुनिक विज्ञान में विकास होने से साधनों का भी विकास होता गया। आज के युग में समाचारपत्र, मुद्रित ग्रंथ लघु पुस्तक–पुस्तिकाएँ, प्रसारण पत्र (रेडियो, टेलीविजन, चलचित्र आदि अनेक साधन उपलब्ध है)
मानव सूचना या जानकारी प्राप्त करने हेतु सदैव किसी–न–किसी माध्यम का सहारा लेता है। दो या दो से अधिक लोगों में जब सूचना का आदान प्रदान होता है। उस सूचना को मुद्रित करके बड़े जनसमूह में पहुँचाया जाता है। लोगों को शिक्षित करने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

परंपरागत माध्यम
1. धार्मिक
अलग–अलग धर्मगुरु धर्म प्रचार–प्रसार हेतु देश तथा विदेश में भ्रमण करते थे उन गुरुओं के द्वारा जनसंचार का कार्य होता या जब वह भ्रमण करते थे तो वे वहाँ पर प्रवचन देते थे, चित्र दिखाते थे, वार्ता सुनाते थे, संगीत या कला का सहारा लेते थे उसके भी जनसंचार का कार्य होता था।

2. लोकगीत
पुराने जमाने से लेकर वर्तमान समय तक के भाव विचारों को अभिव्यक्त करने की कला लोकगीत है। भारत में त्योहारों का बड़ा महत्त्व है। त्योहारों में गीत गाये जाते है। जैसे फसल कराई, बच्चे के जन्म विवाह, मुण्डन आदि समय गीत गाये जाते है। भारत के गाँवों में आज भी गीत गाये जाते है। इसी कारण लोकगीत ग्रामीण जनसंचार के प्रभावी माध्यम है।

लोककथा
भारत में लोक कथायें पुराने जमाने से मौखिक तथा लिखित रूप में एक दूसरे के पास जा रही है। लोककथा का मूल उद्देश्य लोगों को मनोरंजन के साथ समाज बोध देना यह रहा है। जैसे पंचतंत्र, हितोपदेश, बैताल, पंचविशि, आदि की कथाएँ प्रचलित है। जो ये कहानियाँ है वे मनुष्य के रहन–सहन एवं संस्कारों को बढ़ाने में लोकथाओं का महत्वपूर्ण स्थान है।

लोककला
लोकनृत्य और लोकदृश्यश्रव्य माध्यम होने के कारण प्राचीन काल से जनसंचार का माध्यम है। भारत के हर प्रांत की अपनी–2 लोककलाएँ है। जैसे पंजाब का भांगड़ा।

आधुनिक माध्यम
रेडियों जनसंचार का माध्यम रहा है। इसे आकाशवाणी भी कहा जाता है। रेडियों द्वारा समाचारों को आम जनता तक आसानी से पहुँचाया जाता है। रेडियों जनसंचार का प्राचीनतम साधन है।

दूरदर्शन
दूरदर्शन से हम सुन भी सकते और देख भी सकते है। विश्व में घटित होने वाली अच्छी या बुरी घटना का सीधा प्रसारण दूरदशन के द्वारा दिखाई जाती है। दूरदर्शन जनता की पहली पसंद है। दूरदर्शन पर आज कई चैनल प्रसारित है। जो दिनभर लगातार समाचार प्रसारित करते है और सीरियल भी लगातार प्रसारित होते रहते है।

विज्ञापन
विज्ञापन का उद्देश्य वस्तु या सेवा के बारे में जानकारी देना और लोगों का ध्यान आकर्षित करना उनमें रूचि उत्पन्न करना, मांग बढ़ाना। विज्ञापन के द्वारा जनता जागृत होती है। आज जो भी नई चीज बाजार में उपलब्ध होती है। उसकी जानकारी विज्ञापन के द्वारा मिलती है।

कम्प्यूटर
वर्तमान युग में जनसंचार के क्षेत्र में सबसे प्रभावी माध्यम कम्प्यूटर है। वैज्ञानिक के क्षेत्र में, आंतरिक्ष, शिक्षा के क्षेत्र में, व्यापार के क्षेत्र में और गणित के क्षेत्र में कम्प्यूटर का महत्वपूर्ण योगदान है।

इंटरनेट

इंटरनेट के उपयोग से जनसंचार का माध्यम बहुत सरल हो गया है। इंटरनेट से हम मेल एक–दूसरे को आसानी से कर सकते है। इंटरनेट से ैवबपंस डमकपं जैसे थ्बमइववा और ींजे।चच भी जनसंचार के माध्यम है। सारा विश्व इंटरनेट द्वारा एक सूत्र में बंधा हुआ है। जहां छोटी से छोटी और बड़ी जानकारी हम आसानी से उपलब्ध हो सकती है।

निष्कर्ष

पुराने जमाने में जनसंचार का माध्यम धर्म गुरु, लोक कथा, लोक गीत इत्यादि होते थे आधुनिक जमाने में रेडियो, दूरदर्शन, विज्ञापन, कम्प्यूटर और इंटरनेट होते है। पुराने जमाने जनसंचार के माध्यम कम थे लेकिन आज के युग में जनसंचार के साधन बढ गए और आज के युग में इंटरनेट के माध्यम से सारा विश्व एक धागे में बंद गया है और हम घर बैठे देश–विदेश की सूचनाओं में आसानी से उपलब्ध हो जाती है।

संदर्भ सूची

1. डॉ0 सिद्राम कृष्णा खोत/जनसंचार एवं पत्रकारिता कल और आज, रोली बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रथम संस्करण, 2013, पृ0 75
2. डॉ0 जमादार ए. एच, जानअहेमद के. जे., प्रयोजनमूलक हिंदी तथा भाषा कम्प्यूटिंग, अभिजित पब्लिकेशन, पृ0 संस्करण 2004
3. डॉ0 सिद्राम कृष्णा खोत/जनसंचार एवं पत्रकारिता कल और आज, रोली बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रथम संस्करण, 2013
4. डॉ0 आर. जयचन्द्रन, हिन्दी विज्ञापन : परख और पहचान, अभय प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2012